पुरुष परीक्षाक आधार पर शास्त्र विद्या कथाक उल्लेख करू।

संस्कृत साहित्यमे जे स्थान आदिकवि वाल्मीकिक, तमिलमे कम्ब कविक, मराठीमे ज्ञानेश्वरक, अवधीमे तुलसीक, व्रज-भाषामे सूरक, राजस्थानीमे मीराक ओ असममे शंकरदेवक अछि, मैथिलीमे वएह स्थान अछि विद्यापतिक। हिनक प्रमुख अवदान थिक मैथिलीमे उपलब्ध पदावली। राधाकृष्णक अमर प्रेमकेँ रसमाधुर्यसँ ओत-प्रोत कय, अलंकार झंकारसँ अनुगुञ्जित कय, कला-कल्पनासँ सिंचित कय जे रसधार प्रवाहित कएल ओहिसँ मिथिलाक लोकसाहित्य अद्यावधि उर्वर अछि। किन्तु समाज निर्माणक आधार लोकपौरुषकेँ जगयबाक हेतु हुनक जे अद्वितीय प्रयास रहल, 'तेजः क्षमा वा नैकान्तं कारसं भाव विदः कवेः' केर सूत्रकेँ जीवनक व्यापारमे जेना ओ समाहित कयलनि कलाविलासक संग प्राणोल्लासकेँ जेना ओ अभिव्यक्ति देलनि, हुनक व्यक्तित्व ताहिसँ प्रखर, उच्चतर ओ भास्वर रूपमे सर्वदाक लेल व्याप्त भऽ सकल। अवहट्टमे कीर्तिलता-पताका ओ संस्कृतमे अंकित पुरुष परीक्षा हुनक ओही पौरुष स्वरकेँ प्रखर करैछ जेना कृष्णक स्वरूपक ज्ञानक लेल भागवत संग महाभारतकेँ पढ़ब आवश्यक अछि तहिना विद्यापतिक वास्तविक परिचय लेल पदावलीक संग कविक अन्यान्य कृतिहुक अनुशीलन आवश्यक अछि। ताहिमे पुरुष परीक्षा हुनक व्यक्तित्वकेँ विशेष व्याप्ति देबामे अन्यतम सिद्ध होइत अछि।

'पुरुष-परीक्षा' सर्वथा अन्वर्थक नाम अछि। विद्यापतिक शब्दमे —— "पुरुषाः परिचीयन्ते युक्तैरस्याः परीक्षया। तत् पुरुषपरीक्षेयं कथा सर्वमनः प्रिया।" विद्यापतिक धारणा छनि जे पुरुषक आकार-धारण कयनिहार तँ बहुतो भेटता मुदा पुरुषतः ओ थिकाह जनिकामे पुरुष लक्षण होनि अर्थात् जनिकामे वीरता, बुद्धि आ विद्या होनि जे धर्म अर्थ काम ओ मोक्ष ई चारू पुरुषार्थकेँ सिद्ध कयनिहार होथि।

पुरुष परीक्षा चारि परिच्छेदमे विभाजित अछि। पुरुष लक्षणक अनुसार प्रथममे वीरक, दोसरमे सुबुद्धिक, तेसरमे सविद्यक ओ चारिम परिच्छेदमे चारू पुरुषार्थक प्रतिपादन भेल अछि। सम्मिलित रूपेँ ४४ गोट छोट-पैघ सम प्रकारक कथा एहि ग्रन्थमे संकलित अछि।

Scanned with CamScanner

पुरुष- परीक्षामे विद्यापतिक साहित्यिक रुचि अभिव्यक्त अनेक प्रसंग अछि। विद्यापति भाव एवं कला दुहू पक्षक समर्थक छथि। एहि ग्रन्थक अध्ययन सँ तत्कालीन सामाजिक परिस्थिती पर बहुविध- प्रकाश पड़ैत अछि। विद्यापतिक समयमे स्त्रीशिक्षा संगीत, नृत्य, चित्र आदि कला, पर्व तिहारमे सुखराती पावनि, दूत गामी नावक यात्रा, सतीत्व आदिक प्रसंग, न्याय व्यवहार, वर्णाश्रमानुकूल आचार- विचार, गृहस्थ- सन्यासिकधर्म, धूर्त-वेश्या आदिक कूट-कपट युद्धक व्यूह-रचना राजनीतिक सन्धि विग्रह एवं भेद आदि समाजक चित्राधार रहय।

शास्त्रीय निर्देशक अनुसार ग्रन्थमे प्रतिपादक, प्रतिपाद्य विषय, औद्धत्य एवं संबन्ध एहि चारि विषयक निबन्धन आवश्यक रहैत अछि। पुरुष- परीक्षामे विद्यापति एहि चारू विषयक समावेश कयल गेल अछि।

'शास्त्र विद्यक कथा' पुरुष परीक्षाक ~~चतुर्थ~~ तृतीय परिच्छेदमे संकलित अछि। एहि मे कहल गेल अछि जे "स्वाध्याय कय, अर्थ अभिप्राय बुझि जे तर्क एवं शास्त्र दुहूमे पारंगत छथि तथा शास्त्रसँ, विद्या-ज्ञानसँ, प्रख्यात छथि, ओ एह शास्त्र विद्य कहबैत अछि।

उज्जयिनी नगरीमे विक्रमादित्य राजा छलाह। एक दिन कोनहु एकटा ब्राह्मण माथक पीड़ासँ ग्रस्त भ हुनक द्वारपर अयलाह। ~~ब्राह्मण माथक पीड़ासँ ग्रस्त भ~~ ब्राह्मण कहल—

'राजाकेँ प्रजाक पालन रूप व्रत नहि त्याग करबाक थिक, विशेषतः दुर्गतिमे पड़ल, व्याधिसँ ग्रस्त तथा आर्त ब्राह्मणक।

तेँ दुर्दशामे पड़ल व्याधि-पीड़ित ब्राह्मण हमर रक्षा श्रीमान कयल जाय। ब्राह्मणकेँ ओहना स्थितिमे देखि, राजाक हृदय दयासँ द्रवित भ गेल। एकर की होयतैक से बुझबाक इच्छासँ वराह नामक ज्योतिषशास्त्रक वेत्तासँ कहल— हे वराह की ब्राह्मणक प्राण बँचतनि? ओ वराहमिहिर कहल— मद्यपान नित्य कयलाहि ई नीरोग होयताह, ओ पुरुषायु अर्थात शतायु धरि जीवित रहताह। से सुनि राजा सोच- लनि— अरे शास्त्रदर्शी भ ई की बजैत छथि? जकर कोनो प्रसंगे नहि तकर निषेध की करैत छथि? ब्राह्मणकेँ मदिरापीबाक प्रसंग कोन?

तखन राजा हरिश्चन्द्र नामक वैद्यकें बजाय आदेश देल ओ
हिनक रोग की थिकनि, तकर चिकित्सा की छैक ? वैद्य – देव,
ब्रह्मकीट व्याधि थिकनि आ तकर चिकित्सा की छैक ? वैद्य
कहल — देव, ब्रह्मकीट व्याधि थिकनि । ओकर कोनो प्रतीकार
नहि छैक । राजा कहल – रोग औषधि विधाता नहि
बनाओल से तँ सम्भव नहि । वैद्य कहल - ब्रह्मकीट, हिनक
माथक गुद्दा काटि खाइछ, ताहिसँ ई पीड़ा– विकल छथि । ओ
ब्रह्म